य एषु सुप्तेषु जागर्ति | वर्ष 4 | अंक 103 | पृष्ठ 16 | मूल्य 5.00 | झुंझुनूं, शनिवार, 17 जनवरी, 2026 | माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी संवत् 2082

राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और दिल्ली से प्रकाशित

राजस्थान पत्रिका

पत्रिका अखबार हर दिन लोगों के घर के दरवाजे खोलता है और पढ़ने के बाद मन के दरवाजे खोलता है।

जमीन से ड्रोन और उसमें लगे उपकरणों को नियंत्रित करेगी स्वदेशी प्रणाली

सीरी के वैज्ञानिकों ने बनाया स्वदेशी ड्रोन फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

पिलानी . मानव जीवन में ड्रोन की बढ़ती भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में वैज्ञानिकों ने एक अहम उपलब्धि हासिल की है। पिलानी स्थित सीरी (केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान) के वैज्ञानिकों ने पूर्णतया स्वदेशी ड्रोन फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम विकसित किया है, जो अब तक के सभी परीक्षणों में सटीक और सफल रहा है। अगले आठ से दस माह में इसके व्यावसायिक उत्पादन की शुरुआत होने की संभावना है। विकसित की गई इस ड्रोन फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम तकनीक को व्यवसायिक उत्पादन शुरू करने के लिए एक निजी कंपनी को सौंप दी गई है।

यह होगा फायदा

ड्रोन फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम जमीन से ड्रोन का संचालन करता है। इसके माध्यम से ड्रोन में लगे विभिन्न मशीनों और उपकरणों को भूमि से ही निर्देशित और नियंत्रित किया जाता है। इसकी खास बात यह है कि स्वदेशी तकनीक से विकसित इस ड्रोन फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम में उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकता के अनुरूप बदलाव और तकनीकी संशोधन कर सकता है।

पिलानी ड्रोन में लगा फ्लाइट कंट्रोल सिस्टमपिलानी ड्रोन में लगा फ्लाइट कंट्रोल सिस्टमड्रोन में लगा फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम।

अब तक विदेशों पर निर्भर

इस प्रणाली को विकसित करने वाले सीरी के वैज्ञानिक डॉ. कौशल किशोर ने बताया कि उद्योग, चिकित्सा सेवा सहित अनेक क्षेत्रों में ड्रोन सेवाओं की भूमिका लगातार बढ़ रही है। ड्रोन फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम अब तक देश में आयात पर निर्भर था। स्वदेशी प्रणाली के विकसित होने से न केवल आयात पर निर्भरता कम होगी, बल्कि देश के ड्रोन उद्योग को भी नई दिशा मिलेगी।

मेक इन इंडिया को मजबूती

उन्होंने बताया कि वर्तमान में ड्रोन फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम केवल चार-पांच देशों में ही निर्मित होता है, जिससे इसे ऊंची कीमत पर आयात करना पड़ता है। आयातित सिस्टम न केवल महंगे होते हैं, बल्कि देश की तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप उनमें आवश्यक बदलाव भी संभव नहीं हो पाता। स्वदेशी फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम में जरूरत के अनुसार संशोधन किया जा सकता है, जो इसकी बड़ी विशेषता है। स्वदेशी प्रणाली के विकसित होने से 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' मिशन को भी मजबूती मिलेगी। साथ ही यह राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण साबित होगा।

करीब 40 प्रतिशत सस्ता

आयात किए जाने वाला ड्रोन फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम इस स्वदेशी सिस्टम से 40 प्रतिशत महंगा मिलता था। राष्ट्रीय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए विदेश से आयातित फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम को भारतीय सेना द्वारा उपयोग में नहीं लिया जाता।

इनका कहना है

सीरी की ओर से यह प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हाल ही में नई दिल्ली में डीएसआईआर के स्थापना दिवस समारोह में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह की उपस्थिति में किया गया। उम्मीद है कि अगले आठ से दस माह में इसका उत्पादन शुरू हो जाएगा। इससे राष्ट्रीय सुरक्षा और अनुसंधान क्षेत्र को नई मजबूती मिलेगी।

-डॉ. पी.सी. पंचारिया, निदेशक, सीरी संस्थान, पिलानी